इंडिया पथ

R.N.I. No. - HARBIL/2014/55645 Postal Reg. No.- RTK/039/2014-16 मासिक

7 » 'शब' में सबको आश्चर्यचकित कर देंगी रवीना

वर्ष : 2 अंक : 10 रोहतक जनवरी 2016 पृष्ठ : 8 मूल्य : 7 रुपये E-Mail : indiapath01@gmail.com हरियाणा में प्रसारित

"बिहार चुनाव में हार के बाद भाजपा के कई नेताओं ने पार्टी अध्यक्ष अमित शाह के नेतृत्व पर सवाल खड़े किए हैं। लोकसभा चुनावों में करारी हार के बाद जदयू नेता नीतीश कुमार का फिर से मजबूत होना और आप नेता अरविंद केजरीवाल का उदय बताता है कि भाजपा के लिए कांग्रेस के कमजोर होने से भी राहत नहीं है। भाजपा का दावा है कि वह अपने अभियान 'मिस्ड कॉल' के जरिये 11 करोड़ से अधिक सदस्य बनाकर दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन गई है। वर्ष 2016 में पांच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों में चार में भाजपा को बड़ी आस नहीं है लेकिन असम में जीत के लिए प्रयासरत रहेगी। प्रत्येक जिले में कार्यालय व हर राज्य में आधुनिक उपकरणों से लैस कार्यालय स्थापित करने की योजना है।"

भाजपा की नए साल में नई उम्मीदें

भाजपा जहां वर्ष 2014 में की महत्वाकांक्षाएं परवान चढ़ीं और मोदी लहर की परिणति लंबे अंतराल के बाद केंद्र में भगवा पार्टी के बहुमत वाली पहली सरकार के रूप में हुई, वहीं वर्ष 2015 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का करिश्मा भाजपा के काम नहीं आया और दिल्ली तथा बिहार विधानसभा चुनाव में उसकी करारी हार हुई। भाजपा के लिए वर्ष 2015 इसके पिछले बरस 2014 की तुलना में पूरी तरह विरोधाभास लिए आया। न केवल विधानसभा चुनावों में उसे हार मिली बल्कि राजनीतिक रूप से संवेदनशील मुद्दों पर भी उसकी खासी आलोचना हुई चाहे वह भूमि विधेयक हो या फिर गौमांस विवाद हो।

वर्ष 2016 में पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं और उनमें भी चार में भाजपा को बड़ी आस नहीं है। वह असम में जीत के लिए प्रयासरत रहेगी। स्थानीय नेताओं की उपेक्षा और अपेक्षित चुनाव प्रचार के अभाव में दिल्ली और बिहार को खोने के लिए करारी आलोचना का सामना करने वाली भाजपा ने उन राज्यों के लिए अपनी रणनीति बदल दी है जहां विधानसभा चुनाव होने हैं।

असम के जानेमाने नेता सर्बानंद सोनोवाल को उसने पूर्वोत्तर राज्य में अपने मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के तौर पर पेश किया है। बिहार चुनाव पार्टी अध्यक्ष अमित शाह के लिए कड़ी चुनौती थे।

इन चुनावों में हार के बाद कई बार संगठन का नेतृत्व कर चुके भाजपा के वयोवृद्ध नेता लालकृष्ण आडवाणी के साथ तीन अन्य नेताओं ने शाह के नेतृत्व पर सवाल खड़े कर दिए। आडवाणी और मुरली मनोहर जोशी को पार्टी के मुख्य कार्यकारी मामलों से दरकिनार कर 'मार्गदर्शक मंडल' में डाला गया था जिसकी अस्तित्व में आने के बाद से अब तक कोई बैठक ही नहीं हुई। पार्टी के सांसद कीर्ति आजाद ने अरुण जेटली के दिल्ली जिला क्रिकेट संघ की अध्यक्षता वाले समय में उसमें कथित भ्रष्टाचार होने का आरोप लगाया। आजाद के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करते हुए उन्हें पार्टी से निलंबित कर दिया गया। इस संदर्भ में लालकृष्ण आडवाणी और मुरली मनोहर जोशी की बैठक ने उनके अगले कदम को लेकर अटकलें तेज कर दीं। इसके अलावा, अगले माह शाह का कार्यकाल भी खत्म हो रहा है। शाह को लेकर हालांकि भाजपा में 'अवश्यंभावी' की भावना है क्योंकि पार्टी के संगठनात्मक मामलों में अपना प्रभाव रखने वाला आरएसएस उनके समर्थन में प्रतीत होता है लेकिन आडवाणी और उनके साथी असहज करने वाले कुछ सवाल जरूर उठा सकते हैं।पूर्ववर्ती पार्टी अध्यक्ष निर्णय लेने में विलंब होने पर सामूहिक पहल करते हुए आम सहमति बनाने की कोशिश करते थे जबकि शाह तुरतफुरत निर्णय लेते हैं। पार्टी के एक नेता ने शाह का बचाव करते हुए कहा कि भाजपा अध्यक्ष ने अपने पूर्ववर्तियों के कार्यकाल की तुलना में अपने एक साल के दौरान राज्यों का ज्यादा दौरा कर संगठन को मजबूत करने का प्रयास किया है। शाह हालांकि अपनी कार्यशैली पर सवालों को "आम मुद्दा" कह कर टाल देते हैं।

इसके अलावा पार्टी सूत्रों का यह भी कहना है कि भाजपा की एकमात्र प्रतिद्वन्द्वी कांग्रेस ने अब तक अपने पुनर्जीवित होने का कोई संकेत नहीं दिया है। वर्ष 2014 में लोकसभा चुनावों में करारी हार के बाद जदयू के नेता नीतीश कुमार का फिर से मजबूत होना और आप नेता अरविंद केजरीवाल का उदय बताता है कि भाजपा के लिए कांग्रेस के कमजोर होने के बाद भी राहत नहीं है। भाजपा का दावा है कि इस साल उसने अपने सदस्यता अभियान 'मिस्ड कॉल' के जरिये 11 करोड़ से अधिक सदस्य बनाए और दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन कर उभरी। साल 2016 में भाजपा की योजना प्रत्येक जिले में एक कार्यालय और हर राज्य में आधुनिक उपकरणों से लैस कार्यालय स्थापित करने की है।

(इंटरनेट से साभार)

फेल नहीं करने की पॉलिसी को समाप्त करने के पक्ष में हैं राज्य

नई दिल्ली। पिछली संप्रग सरकार द्वारा वर्ष 2009 में बनाए गए शिक्षा के अधिकार (आरटीई) कानून के एक महत्वपूर्ण प्रावधान यानि पहली से आठवीं कक्षा तक बच्चों को फेल नहीं करने की नीति (नो डिटेंशन पॉलिसी) को समाप्त करने के पक्ष में अब राज्यों ने केंद्र के साथ मिलकर एक स्वर में आवाज उठाना शुरू कर दिया है।

यहां केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सूत्रों ने बताया कि मंत्रालय ने इस मामले पर 22 राज्यों से लिखित में राय भेजने को कहा था। इसमें से अब तक मंत्रालय के पास कुल 18 राज्यों ने अपनी राय को लिखित

केंद्र को 18 राज्यों ने लिखित में भेजी अपनी राय

रूप में भेज दिया है। इसमें केवल एक राज्य यानि कर्नाटक ऐसा है, जो चाहता है और उसने केंद्र से मांग भी की है कि इस नीति को खत्म ना किया जाए।

गौरतलब है कि फेल न करने की नीति को खत्म करने के लिए पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार ने हरियाणा की

तत्कालीन शिक्षा मंत्री गीता भुक्कल की अध्यक्षता में एक समिति भी गठित की थी, जिसने बीते वर्ष हुई केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड की बैठक में अपनी रिपोर्ट सौंपी है। रिपोर्ट में भी नीति को लेकर समिति ने जितने विचार-विमर्श और चर्चाएं की हैं, उनमें ज्यादातर इस नीति को समाप्त करने के पक्ष में हैं। अभी मंत्रालय में रिपोर्ट पर विचार-विमर्श चल रहा है।

जिन राज्यों ने फेल नहीं करने की नीति को समाप्त करने की सिफारिश की है। उनमें राजधानी दिल्ली, मध्य-प्रदेश, पंजाब, उत्तर-प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, ओडिशा, हिमाचल-प्रदेश, राजस्थान, पुडुचेरी, सिक्किम, त्रिपुरा, मिजोरम शामिल है। इसके अलावा, इसी सूची में शामिल कर्नाटक ऐसा राज्य है, जिसने मानव संसाधन विकास मंत्रालय से फेल न करने वाली नीति को बनाए रखने का अनुरोध किया है।

सिखों के इतिहास व संस्कृति को दर्शाता अमृतसर

अमृतसर की स्थापना सिखों के चौथे गुरु रामदास की ओर से की गई थी। उन्होंने यहां तालाब का निर्माण कराया जिसकी जमीन भेंट में मुगल शासक अकबर की ओर से दी गई थी। इसी तालाब को अमृत का तालाब भी कहा जाता है। जिसके आधार पर इस शहर को अमृतसर कहा जाता है।

अमृतसर पूरे विश्व में स्वर्ण मंदिर के कारण अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए है। यह सिखों के इतिहास व संस्कृति की वर्षों पुरानी यादों को आज भी तरोताजा किए हुए है। अमृतसर पाकिस्तान से आने वाले यात्रियों के लिए भारत का प्रवेशद्वार भी कहा जाता है। अमृतसर की स्थापना सन् 1579 में हुई थी। आज भी यह पुराना शहर चारों ओर से एक दीवार से घिरा हुआ है जिसमें 20 प्रवेशद्वार हैं। अमृतसर की स्थापना सिखों के चौथे गुरु रामदास की ओर से की गई थी। उन्होंने यहां तालाब का निर्माण कराया जिसकी जमीन भेंट में मुगल शासक अकबर की ओर से दी गई थी। इसी तालाब को अमृत का तालाब भी कहा जाता है। जिसके आधार पर इस शहर को अमृतसर कहा जाता है। तालाब के बीच में बना भव्य मंदिर गुरु रामदास के पुत्र अर्जुनदेव ने बनवाया था। इस मंदिर में सिखों के पवित्र ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहब को रखा गया है।

गुरु अर्जुन दव की ओर से बनाए गए तालाब के मध्य में बने मंदिर को सन् 1803 में पंजाब के शासक महाराजा रणजीत सिंह ने संगमरमर, तांबे व सोने से मढ़वाया। एक अनुमान के अनुसार इस मंदिर में लगा सोना लगभग 400 किलो तक है जिसके कारण इस मंदिर को स्वर्ण मंदिर नाम दिया गया है। इसे हरि मंदिर व दरबार साहब के नाम से भी पुकारा जाता है। यह मंदिर अपने चार प्रवेश द्वारों से आने-जाने वालों का स्वागत करता हुआ लगता है। सेंट्रल सिख म्यूजियम में धर्म के विरोध में किए गए सिखों के त्याग और बलिदान को पेंटिंगों के जरिए दर्शाया गया है। इसके साथ ही कुछ प्राचीन सिक्कों, शस्त्रों और हस्तनिर्मित पुस्तकों का भी संकलन इस म्यूजियम में है। अमृतसर के लोहागढ़ प्रवेशद्वार के बाहरी ओर स्थित दुर्गा मंदिर भी देखने योग्य है। दुर्गा मंदिर की शिल्पकला स्वर्ण मंदिर के समान लगती है। अंग्रेजी हुकूमत के विरोध में किए गए आंदोलन में एकत्रित लोगों को एक ब्रिटिश जनरल के आदेश पर बेदर्दी के साथ गोलियों से भून कर मौत के घाट उतार दिया गया था। 13 अप्रैल 1919 की यह घिनौनी याद आज भी जलियांवाला बाग की दीवारों पर गोलियों के निशान बनकर अंग्रेज शासकों की क्रूरता का परिचय देती है।

इस हत्याकांड में करीबन 2000 मासूम लोगों की जानें चली गई थीं। स्वतंत्रता आंदोलन के इन शहीदों की याद में जलियांवाला बाग को बेहद खूबसूरत उद्यान बना दिया गया है तथा इसके अंदर एक अमर ज्योति प्रज्वलित की गई है जो हर समय जल कर उन शहीदों के त्याग और बलिदान की यादों को तरोताजा रखती है तथा उनके प्रति श्रद्धांजलि भी अर्पित करती है। अमृतसर के पश्चिम में लगभग 11 किलोमीटर दूर स्थित राम तीर्थ पर एक बड़ा तालाब और कई मंदिर हैं। इस जगह पर हर साल कार्तिक की पूर्णिमा पर चार दिवसीय मेला लगता है। देश के विभिन्न भागों से हजारों लोग इस पवित्र स्थान के दर्शन के लिए आते हैं।

अमृतसर हस्तनिर्मित वस्तुओं के लिए भी बहुत प्रसिद्ध है। विभिन्न प्रकार के पारम्परिक डिजाइन वाले फुलकारी के वस्त्र यहां की खास विशेषता है। इसके अतिरिक्त पंजाबी जूते, आभूषण तथा सजावट की वस्तुएं भी आप यहां से खरीद सकते हैं। अमृतसर देश के विभिन्न भागों से रेल तथा सड़क मार्ग से भी जुड़ा हुआ है। आप चाहे देश के किसी भाग में हों, आपको यहां तक आने के लिए कोई खास दिक्कत नहीं होगी।

ग्वालियार के दर्शनीय स्थलों की बात करें तो सबसे पहले सूर्य मंदिर का नाम आता है जो देश के अन्य मंदिरों के लिए एक आदर्श है। यह सूर्य मंदिर उड़ीसा के कोणार्क मंदिर की शैली पर बना है।

इतिहास और आधुनिकता का संगम है ग्वालियर

मध्य प्रदेश का ख्यातिप्राप्त शहर ग्वालियर कई यादों को समेटे हुए है। इस शहर को इतिहास और आधुनिकता का अनोखा संगम भी कह सकते हैं। यहां के दर्शनीय स्थलों की बात करें तो सबसे पहले सूर्य मंदिर का नाम आता है जो देश के अन्य मंदिरों के लिए एक आदर्श है। यह मंदिर पंडे-पुजारियों और भिखारियों के आतंक से तो मुक्त है ही साथ ही अन्य जगहों की अपेक्षा यहां सफाई पर भी अत्यधिक ध्यान दिया गया है। यह सूर्य मंदिर उड़ीसा के कोणार्क मंदिर की शैली पर बना है। लाल पत्थर से निर्मित इस भव्य मंदिर के चारों ओर मनोरम उद्यान भी हैं। भारत के प्रमुख किलों में गिना जाने वाला ग्वालियर का किला राजा मानसिंह ने गूजरी रानी के प्रति प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए बनवाया था। बलुए पत्थर की पहाड़ी पर निर्मित इस किले में छह महल हैं जिनमें से मान मंदिर और मृगनयनी का गूजरी महल प्रमुख हैं। 15वीं सदी में बना यह किला भारतीय वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है। रानी झांसी का स्मारक भी देखने योग्य है। इस स्मारक में

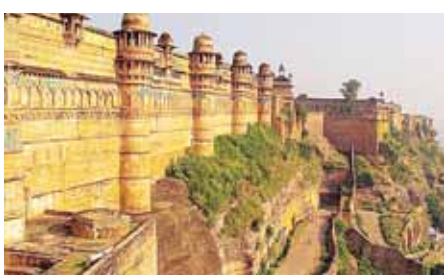

1857 के स्वतंत्रता संग्राम की नायिका रानी लक्ष्मीबाई की विशाल अश्वारूढ़ प्रतिमा तथा समाधि है। यह किला रानी का बलिदान स्थल भी है। मुहम्मद गौस तथा तानसेन का मकबरा भी आप देखने जा सकते हैं। गुरु-शिष्य परम्परा के प्रतीक इस स्थल में मुगल शैली में निर्मित तानसेन के प्रारम्भिक गुरु मुहम्मद गौस का मकबरा है। इसी विशाल और भव्य मकबरे के अहाते में संगीत सम्राट तानसेन की क्रब भी है। आधुनिक इटालियन वास्तुकला शैली के अनुपम उदाहरण जयविलास महल में जहां एक ओर बेशकीमती चीजें नुमाइश के लिए रखी गई हैं, वहीं दूसरी ओर विशाल फानूसों की चकाचौंध रोशनी में महल की सुनहरी पच्चीकारी और रंगसज्जा देखते ही बनती है। नुमाइश के लिए रखी गई चीजों में बड़ा कालीन तथा चांदी का पलंग, छत्र और रेल दर्शकों को खासी आकर्षित करती है। ग्वालियर में सास-बहू का मंदिर भी है। मिस्र के पिरामिड़ों की आकृति वाले ये दोनों मंदिर 1093 में बने थे। एक-दूसरे के बिल्कुल पास बने इन मंदिरों में नक्काशीदार खंभे तथा बड़ी-बड़ी खिड़कियां लगी हैं।

पर्यटन के लिए अच्छा है केरल

केरल, भारत का सबसे विकसित समाज है। यहां सौ फीसदी साक्षरता है। स्वास्थ्य सेवाओं के मामले में यह विश्व-स्तर पर अग्रणी है। यह देश का सबसे साफ-सुथरा राज्य है।

सर्दियों में हिल स्टेशन घूमने जाना रोमांचक तो लगता है पर परेशानी भी काफी झेलनी पड़ती है। ऐसे में यही सोचते हैं कि सर्दियों में जाएं तो कहां जाएं? अगर आप इन सर्दियों में घूमना चाहते हैं, तो दक्षिण भारत सबसे बेहतर है। वहां का तापमान इन दिनों 28 डिग्री के करीब होता है। दक्षिण भारत का केरल राज्य खूबसूरती, हरियाली से भरा पड़ा है। पश्चिम में अरब सागर और लगभग 44 नदियों से घिरा यह राज्य दूर-दूर से पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करता है। समुद्री किनारा, बैक वॉटर, हरे-भरे पहाड़ और असाधारण वाइल्ड लाइफ मन को मोह लेते हैं। यहां का त्योहार और ऐतिहासिक स्मारक खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं।

केरल, भारत का सबसे विकसित समाज है। यहां सौ फीसदी साक्षरता हैं। स्वास्थ्य सेवाओं के मामले में यह विश्व-स्तर पर अग्रणी है। यह भारत का सबसे साफ-सुथरा राज्य है। वैसे तो यहां का मौसम सालभर सुहावना बना रहता है पर मानूसन (जून-सितम्बर और अक्टूबर-नवंबर) में यहां की हरियाली देखते बनती है। फरवरी में मई तक का मौसम भी यहां की सुंदरता निहारने का समय है। वहीं ठंड में यहां घूमना सबसे बेहतर समय है। इस समय यहां का तापमान सामान्य से थोड़ा कम रहता है।

केरल में देखने के लिए बहुत कुछ है। जैसे बैकवॉटर, समुद्री तट, पहाड़, स्मारक, वाटरफॉल और वन्य जीव। यहां पर हाउसबोट का भी आनंद किया जा सकता है। केरल की बोट रेस पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यहां के रंग-बिरंग त्योहार और कलाएं देखते बनती हैं।

आयुर्वेद के मामले में केरल सबसे धनी है। लगभग सौ सालों से यहां देश-विदेश के लोगों के हर रोग का इलाज आयुर्वेद से किया जा रहा है। यहां का मौसम, प्राकृतिक वातावरण और कूल मानसून आयुर्वेद चिकित्सा में बेहद फायदेमंद होता है। केरल की भूमि को कई आयुर्वेदिक पेड़-पौधों से समृद्ध होने का वरदान हासिल है। यहां पर कई आयुर्वेदिक स्वास्थ्य केंद्र और अस्पताल हैं। यहां कई योगा केंद्र भी हैं। केरल के बैंकवॉटर में हाउसबोट पर घूमना आश्चर्यजनक और अविस्मरणीय क्षण होता है। हाउसबोट में रहने का भी मजा लिया जा सकता है। इससे आप केरल की खूबसूरती को निहार सकते हैं। केरल के छोटे-छोटे गांवों की असली खूबसूरती देखने का आनंद इन्हीं हाउसबोट से आता है। केरल के बेहतरीन दृश्य, हरियाली और प्राकृतिक सौंदर्य देखने का आनंद मानसून में ही आता है। केरल में बारिश लगातार नहीं होती। एक दो घंटे की बारिश फिर खिली धूप इस मौसम को बेहतरीन बनाते हैं। पहला जून के महीने में और दूसरा अक्टूबर के बीच में। खान-पान के मामले में केरल के क्या कहने! यहां के व्यंजन सभी जगहों से बिल्कुल अलग हैं। सी-फूड, चावल, मालाबार खाना, हरेक में केरल का अलग स्वाद होता है। केरल कभी भी जाया जा सकता है।

हरियाणा मंत्रिमंडल की बैठक में कई निर्णयों पर लगी मुहर

पीएचडी धारक भी सहायक प्रोफेसर के लिए योग्य

इंडिया पथ न्यूज

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल की अध्यक्षता में यहां हुई मंत्रिमण्डल की बैठक में हरियाणा शिक्षा (कॉलेज कैडर) ग्रुप-ख सेवा नियम, 1986 में संशोधन करने के उच्चतर शिक्षा विभाग के प्रस्ताव को स्वकृति प्रदान की गई ।

संशोधन के अनुसार कॉलेजों में असिस्टेंट प्रौफेसर के पद पर नियुक्ति एवं भर्ती के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा ली जाने वाली राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट), यूजीसी द्वारा मान्यता प्राप्त वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद या एसएलईटी या राज्य पात्रता परीक्षा (एसईटी) जैसी परीक्षा न्यूनतम पात्रता शर्त रहेगी। बशर्ते उम्मीदवार, जिन्हें यूजीसी (पीएचडी डिग्री के अवार्ड के लिए न्यूनतम मानक एवं प्रक्रिया) विनियमन, 2009 के अनुसार पीएचडी की डिग्री प्राप्त है या पीएचडी हैं, को कॉलेज में असिस्टेंट प्रौफेसर या इसके समकक्ष पद पर नियुक्ति या भर्ती के लिए उक्त न्यूनतम पात्रता शर्तों से छूट होगी। ऐसे मास्टर प्रोग्राम, जिनके लिए नेट/ एसएलईटी /एसईटी की मान्यता परीक्षा आयोजित नहीं की जाती, के लिए नेट/एसएलईटी /एसईटी आवश्यक नहीं होगा।

केएमपी पर टोल संग्रहण को स्वीकृति : मंत्रिमण्डल की बैठक में हरियाणा राज्य औद्योगिक एवं आधारभूत संरचना विकास निगम द्वारा बनाए जा रहे कुंडली-मानेसर - पलवल एक्सप्रैस वे परियोजना के छ: मार्गी मानेसर-पलवल सैक्शन (आरडी 83.320 किलोमीटर से आरडी 135.650 किलोमीटर तक) पर टोल संग्रहण को स्वीकृति प्रदान की गई। इस सैक्शन पर चार टोल प्लाइंट होंगे। पहला टोल प्लाइंट जिला गुड़गांव के गांव फाजिलवास में, दूसरा जिला मेवात के गांव धुलावत में एवं तीसरा गांव रेवासां में और चौथा जिला पलवल के गांव जोधपुर/चिड़वाटा में होगा। प्रयोक्ताओं से वसूल किए जाने वाले टोल की दर राष्ट्रीय राजमार्ग शुल्क(दर एवं संग्रहण निर्धारण) नियम 2008 और केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी इसके अनुवर्ती संशोधनों के आधार पर निर्धारित की जाएगी।

सेवा नियम में संशोधन : मंत्रिमण्डल की बैठक में हरियाणा नागरिक उड्डयन विभाग के सेवा नियम, 2011 (ग्रुप क) में संशोधन को स्वीकृति प्रदान की गई। संशोधन के अनुसार अब सीधी भर्ती या स्थानांतरण या प्रतिनियुक्ति के माध्यम से हैलीकाप्टर पायलट के पद के लिए आवेदक की शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभव किसी भी संस्था से दस जमा दो या इसके समकक्ष, मैट्रिक या उच्चतर शिक्षा तक हिन्दी या संस्कृत का ज्ञान, कम्प्यूटर का ज्ञान होना निर्धारित की गई है। उसके पास वाणिज्यिक हैलीकाप्टर पायलट लाइसैंस होना भी अनिवार्य किया गया है। आवदेक को हैलीकाप्टर के पायलट-इन-कमांड के रूप में कम से कम 500 घंटे उड़ान का अनुभव भी होना चाहिए। इन 500 घंटों में दस घंटे रात्रि में उड़ान करने का अनुभव और उडाए जाने वाले हैलीकाप्टर पायलट-इन-कमांड के रूप में कम से कम 75 घंटों का अनुभव शामिल होना चाहिए। आवेदक के पास आशयित उड़ान की तिथि से ठीक पूववर्ती अंतिम 30 दिन में हैलीकाप्टर पर पांच घंटों सहित गत छ: महीनों में हैलीकाप्टर पर पायलट-इन-कमांड के रूप में कम से कम 30 घंटों का अनुभव होना चाहिए।

चंडीगढ़। हरियाणा मंत्रिमंडल की बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर।

खेल अकादमी बनेगी सोसायटी : हरियाणा सरकार ने हरियाणा सोसायटी पंजीकरण एवं विनियमन अधिनियम, 2012 के तहत हरियाणा साहसिक खेल अकादमी को एक सोसायटी के रूप में गठित करने का निर्णय लिया है। यह निर्णय मंत्रिमण्डल की बैठक में लिया गया है।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल इस सोसायटी के मुख्य संरक्षक (पैटर्न-इन-चीफ) होंगे, जबकि खेल एवं युवा मामले मंत्री अनिल विज इसके अध्यक्ष और खेल एवं युवा मामले विभाग के प्रशासनिक सचिव डॉ. के.के. खण्डेलवाल उपाध्यक्ष होंगे।

सोसायटी का मुख्य उद्देश्य हरियाणा में साहसिक खेलों को प्रोत्साहित एवं बढ़ावा देने के साथ-साथ साहसिक खेलों के लिए प्रशिक्षण सुविधा सृजित करना और इसके लिए बेहतर स्तर की आधारभूत संरचना विकसित करना है।

सोसायटी का पंजीकृत कार्यालय पंचकूला में खेल एवं युवा मामले निदेशालय के परिसर में होगा।

हरियाणा मोटर यान नियम, 1993 में संशोधन : मंत्रिमण्डल की बैठक में परिवहन विभाग द्वारा सेवाएं प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार के शुल्कों को तर्कसंगत बनाने के लिए हरियाणा मोटर यान नियम, 1993 में संशोधन करने के प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की गई है। संशोधित शुल्क ढ़ांचे के अनुसार मृत परमिट धारक के कानूनी उत्तराधिकारी के नाम परमिट के हस्तांतरण के समय नये सिरे से परमिट जारी करने हेतु लिए जाने वाले शुल्क को समाप्त करने का निर्णय लिया गया है, क्योंकि ऐसे परमिट की वैधता कई वर्षों के लिए होती है और परमिट के हस्तांतरण के समय परमिट जारी करने की फीस वसूल किया जाना उचित नहीं है। परमिट प्रदान या नवीनीकरण तथा प्रतिहस्ताक्षर करने हेतु दुपहिया/तिपहिया यान के लिए आवेदन शुल्क 100 रुपये और अन्य मोटर यान के लिए 200 रुपये होगा। माल वाहक के लिए वर्तमान शुल्क 100 रुपये, टैक्सी या स्वचालित रिक्शा के लिए 20 रुपये और प्राईवेट सेवा वाहन के लिए 50 रुपये है।

पढ़ी लिखी स्थानीय सरकार : हरियाणा सरकार ने शहरी स्थानीय निकायों में चुनाव लड़ने के लिए कुछ योग्यताएं निर्धारित करते हुए हरियाणा नगर निगम अधिनियम 1994 की धारा 8 और हरियाणा नगर पालिका अधिनियम 1973 की धारा 13-क में संशोधन करने का निर्णय लिया है।

संशोधन के अनुसार ऐसे व्यक्ति जिनके विरूद्ध सक्षम न्यायालय द्वारा गम्भीर आपराधिक मामलों में 10 साल से अधिक की सजा सुनाई है, वे न्यायालय द्वारा बरी न किए जाने तक चुनाव नहीं लड़ सकेंगे। इसीप्रकार, सहकारी ऋणों के दोषी तथा बिजली बिलों के बकायों के दोषी भी शहरी स्थानीय निकायों का चुनाव नहीं लड़ सकेंगे। इसके अतिरिक्त, शहरी स्थानीय निकायों के सभी स्तरों के प्रतिनिधियों के लिए शैक्षणिक योग्यता मैट्रिक निर्धारित की गई है। यह सुनिश्चित करने के लिए की महिलाओं एवं अनुसूचित जाति के मतदाताओं को अत्याधिक नुकसानदायक स्थिति से न गुजरना पड़े, महिलाओं एवं अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए आठवीं कक्षा और एससी जाति की महिला उम्मीदवारों के लिए पांचवीं कक्षा पास न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता निर्धारित की है। शहरी निकायों के चुनाव लड़ने वाले सभी उम्मीदवारों को स्वत: घोषणा करनी होगी कि उनके आवास पर सक्रिय शौचालय मौजूद है। वर्तमान में ऐसे व्यक्ति, जिन्हें न्यायालयों द्वारा सजा दी गई है, शहरी स्थानीय निकायों के चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य ठहराए गए हैं, परन्तु ऐसे उदाहरण हैं कि जिन लोगों के विरूद्ध आरोप तय कर दिए गए हैं लेकिन ट्रायल अभी पूर्ण नहीं हुआ है वे चुनाव लड़ने के लिए योग्य हैं।

सहायक जनसंपर्क अधिकारी रघवीर सेवानिवृत्त

रोहतक। जिले के सहायक सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी रघवीर सिंह गुरुवार को सेवामुक्त हुए। 22 वर्षों के कार्यकाल की यादों को रघवीर सिंह ने विभाग में आयोजित कार्यक्रम में साझा किया। जिला सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी कमल सिंह ने उन्हें सम्मानित किया। उन्होंने बताया कि रघवीर सिंह ने 1993 में पानीपत में बतौर एफपीए के रूप में सेवा शुरू की। विभाग में रहते हुए उन्होंने रोहतक में रेडियो प्रेस संपर्क अधिकारी के अलावा अंबाला, करनाल, झज्जर में भी अपनी सेवाएं दी। *फोटो : संदीप*

हरियाणा में 10,17,24 जनवरी को पंचायत चुनाव

इंडिया पथ न्यूज

चंडीगढ़। हरियाणा में पंचायत चुनाव कार्यक्रम घोषित हो गया है। राज्य चुनाव आयुक्त राजीव शर्मा ने तीन चरणों में चुनाव कराने की घोषणा की है। नामांकन पत्र भरने की प्रक्रिया 23 दिसंबर से शुरू होगी और मतगणना 28 जनवरी को होगी। आदर्श चुनाव आचार संहिता मंगलवार से लागू हो गई है। पहले चरण के लिए मतदान 10 जनवरी, दूसरे चरण के लिए 17 जनवरी और तीसरे चरण के लिए मतदान 24 जनवरी को होगा। जिला परिषद और पंचायत समिति सदस्यों के लिए पड़े वोटों की गिनती 28 जनवरी को होगी। राज्य चुनाव आयोग कार्यालय में राज्य चुनाव आयुक्त राजीव शर्मा

ने मंगलवार को पत्रकार सम्मेलन में कहा कि सभी 21 जिला परिषद सदस्यों के लिए नामांकन पत्र पहले चरण में भरे जाएंगे। जबकि पंचायत समिति सदस्यों, सरपंचों और पंचों के लिए नामांकन पत्र पहले, दूसरे और तीसरे चरण में भरे जाएंगे। उन्होंने बताया कि प्रदेश में 21 जिला परिषदों के 416 सदस्यों, 126 पंचायत समितियों के 3001 सदस्यों, सरपंच पद के 6198 और पंचों के 62492 पदों के लिए चुनाव करवाया जाएगा।

चरणों में यूं बंटेंगे खंड: राजीव शर्मा ने बताया कि पहले चरण में 47 विकास खंडों, दूसरे चरण में 44 विकास खंडों और तीसरे चरण में 35 विकास खंडों में चुनाव कराए जाएंगे। पहले चरण के लिए 23 दिसंबर से 29 दिसंबर तक, दूसरे चरण के लिए 30 दिसंबर से 4 जनवरी तक और तीसरे चरण के लिए 5 जनवरी से 9 जनवरी तक नामांकन पत्र भरे जाएंगे।

ईवीएम के जरिए पड़ेंगे वोट: प्रदेश में सरपंच और जिला परिषद सदस्यों के लिए मतदान इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीनों (ईवीएम) के जरिए होगा। पंच और पंचायत समिति सदस्यों के लिए मतदान मतपत्र के जरिए होगा। मगर पंचकूला और रेवाड़ी जिलों में पंचायत समिति सदस्यों के लिए भी मतदान ईवीएम के जरिए होगा।

21475 मतदान केंद्र बने: राजीव शर्मा ने बताया कि प्रदेश में कुल 21475 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। इनमें से 4159 मतदान केंद्र संवेदनशील और 4337 अति संवेदनशील घोषित किए गए हैं। इन पर अतिरिक्त सुरक्षा प्रबंध किए जाएंगे। जिला प्रशासन चाहे तो स्थिति को देखते हुए इन केंद्रों की वीडियोग्राफी करवा सकता है।

कश्मीर लक्षण है, रोग नहीं, रोग तो अविश्वास है

पुरस्कार लौटाए जाने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी भारतीय जनता पार्टी की चुप्पी पर मैं अचंभित हूं। लगता है संकीर्ण राजनीति में जुटे ये लोग साहित्य, विज्ञान या दूसरे क्षेत्र के पुरस्कार का मतलब नहीं समझते। ऊंचाई को मापना आसान नहीं है। पुरस्कार पाने वाले निश्चित तौर पर अपने गंतव्य पर पहुंचने की दिशा में एक मील आगे बढ़ गए हैं।

उनका आरोप है कि असहिष्णुता का माहौल बना हुआ है। मोदी झटपट बोलने के आदी हैं, लेकिन इस मसले पर उनकी चुप्पी साफ दिख रही है। असहिष्णुता का आरोप किसी व्यक्ति विशेष ने नहीं लगाया है। देश भर के कोई 500 प्रमुख विद्वानों, वैज्ञानिकों एवं कलाकारों ने अपना पुरस्कार लौटाया है। उन लोगों ने एक दूसरे से कोई सलाह-मशविरा नहीं किया है, लेकिन असहिष्णुता के माहौल में समान तरीके से घुटन महसूस की। जब उन सबों ने महसूस किया कि वे खुल कर खुद को अभिव्यक्त नहीं कर सकते, तो मोदी सरकार को इस बात पर विचार करना चाहिए आखिर ऐसी सोच क्यों उपजी। इसके कई कारण हो सकते हैं। एक कारण केंद्र सरकार के मामलों में अतिवादी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बढ़ता दखल है।

असहिष्णुता महसूस किए जाने को

> “सत्तर वर्षों के अनुभवों का भयावह हिस्सा है कि धर्म के आधार पर खींची गई विभाजन रेखा ने भारत और पाकिस्तान की शक्ल में हिंदुओं एवं मुसलमानों के बीच बैर-भाव को संस्थागत रूप दे दिया है। क्षेत्र के विकास के रास्ते यह बैर भाव किस तरह आता है, इसे कोई भी देख सकता है।”

'विनिर्मित प्रतिक्रिया' करार देना, जैसा कि वित्त मंत्री अरुण जेटली कहा है, वास्तविकता से आंखें बंद करना है। अब तक भाजपा को एहसास हो जाना चाहिए था कि उसके द्वारा हिंदुओं एवं मुसलमानों के बीच धार्मिक अंतर पर जोर दिए जाने से संकीर्णता एवं असहिष्णुता को बढ़ावा मिला है और दोनों समुदाय को एक दूसरे से दूर किया है। पुरस्कार लौटाने वाले एक लेखक ने अकादमी को लिखे अपने पत्र में कहा है कि असहमति की आवाज, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को कुंद करने की मौजूदा प्रवृति ने उन्हें ऐसा कदम उठाने को बाध्य किया है। उन्होंने अपने लेखन के कारण मारे गए नरेंद्र डाभोलकर, गोविंद पनसारे एवं एमएम कुलबर्गी जैसे बुद्धिजीवियों का उदाहरण पेश किया है।

मुझे विश्वास है कि पुरस्कृत लोग अपना विरोध प्रदर्शित करने के लिए 26 जनवरी को दिल्ली की सड़कों पर मार्च करेंगे। सहिष्णु राष्ट्र के साथ क्या हो गया, यह मेरी समझ से परे है। इसने अंग्रेजों के खिलाफ भीषण लड़ाई लड़ी थी। आजादी की लड़ाई में, हिंदु और मुसलमान, दोनों ही शामिल थे। उनमें मुस्लिम समुदाय के मौलाना अबुल कलाम आजाद एवं सीमांत गांधी खान, अब्दुल गफ्फार खान जैसे नेता शामिल थे। उस वक्त भारतीय जनता पार्टी का जन्म भी नहीं हुआ था। जिन लोगों का आजादी की लड़ाई में कोई योगदान नहीं था, उनका सत्ता में आना दुःखद है।

आज जो कुछ भी हो रहा है, वह और भी खराब है। सांप्रदायिक गोलबंदी, नफरत, अपराध, असुरक्षा और हिंसा का माहौल घना हो रहा है। संवैधानिक पदों पर बैठ कर लोग नफरत के अभियान को बढ़ावा या संरक्षण दे रहे हैं। कोई भी देख सकता है कि सरकार स्वतंत्र तरीके से काम नहीं कर रही। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रभारी है। स्थिति इस हद तक पहुंच चुकी है कि सरकार की आकाशवाणी ने संघ प्रमुख मोहन भागवत के विचारों को प्रसारित किया। उन्होंने आपत्तिजनक कोई बात नहीं कही। लेकिन देश इस बात को जानता है कि हिंदुत्व को लेकर उनका कितना कट्टर विचार है।

साफ है कि हिंदुओं के अतिवादी खेमे ने सरकार पर कब्जा पर लिया है। उसने मान लिया है कि वह जो कहती या करती है, वही लोगों की इच्छा है। जज और मुद्दई मिलकर एक हो गए हैं। हिंदुओं के बीच के उदारवादियों को छोड़ दें, जमात-ए-इस्लामी भी उदारवादी नहीं बनना चाहेगा। क्योंकि, उसे आकाशवाणी से अपनी बात प्रसारित करने की इजाजत कभी नहीं मिलेगी। अगर उसे कभी यह मौका मिलेगा, तो वह भी संघ प्रमुख भागवत जैसा ही अतिवादी होगा। इसके बावजूद हम अभी भी बहुलवाद की बात करते हैं। अगर इसके कोई मायने हैं तो अल्पसंख्यकों को समान अधिकार मिलना चाहिए। संविधान ऐसा कहता है। लेकिन यह लागू नहीं हो रहा क्योंकि जो लोग सत्ता में हैं उनका अपना संकीर्ण एजेंडा है।

देश में 80 प्रतिशत हिंदुओं के साथ हम हिंदु राष्ट्र बन सकते थे, जो कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का लक्ष्य है। फिर भी विभाजन के साथ जन्मे भारत के हम लोगों ने धर्मनिरपेक्षता को तरजीह दी और देश के साथ धर्म को नहीं मिलाया।

सही है कि पाकिस्तान इस्लामिक राष्ट्र बन गया। लेकिन यह इसके संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना के समर्थन के बगैर हुआ। ब्रिटिश शासन के फलस्वरूप पाकिस्तान बनने पर उन्होंने कहा था कि हम लोग या तो भारतीय हैं या पाकिस्तानी, मुस्लिम या हिंदु नहीं। लेकिन पाकिस्तान पर मौलवियों का कब्जा हो गया। लंबे समय के बाद बहुत मुश्किल से वहां की जनता थोड़ी उदारता लायी है। जबकि भारत में हम हिंदु समर्थक भावनाओं में बह गए हैं। हिंदु समर्थक भावना मोदी सरकार के बनने से बलवती हुई है। इसका मतलब धर्मनिरपेक्षता को नकारना है, जो हमारे संविधन की प्रस्तावना में लिखा हुआ है।

बंटवारे के पहले मुस्लिम लीग की राय मुसलमानों के लिए अलग देश बनाने की थी। सही है कि पाकिस्तान इस्लामिक गणतंत्र बना। लेकिन मुझे लगता है इसका नतीजा मुसलमानों के लिए सुखद नहीं रहा। वे तीन देशों- भारत, पाकिस्तान और बांग्ला देश में बंट गए। कल्पना कीजिए, अगर मुसलमान साथ बने रहते, तो उनकी आबादी 35 प्रतिशत रहती जो किसी लोकतांत्रिक देश के लिए बड़ी संख्या है।

सत्तर वर्षों के अनुभवों का भयावह हिस्सा है कि धर्म के आधार पर खींची गई विभाजन रेखा ने भारत और पाकिस्तान की शक्ल में हिंदुओं एवं मुसलमानों के बीच बैर-भाव को संस्थागत रूप दे दिया है। क्षेत्र के विकास के रास्ते यह बैर भाव किस तरह आता है, इसे कोई भी देख सकता है।

इतना ही नहीं, हर समय दोनों एक दूसरे के गले की हड्डी बने हुए हैं। दोनों के बीच दो युद्ध हो चुके हैं। इसके अलावा कारगिल हुआ। हालांकि भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने कहा है कि युद्ध कोई विकल्प नहीं है। फिर भी दोनों के बीच स्थायी शांति के कोई आसार नहीं हैं।पाकिस्तान का कहना है कि कश्मीर मूल जड़ है। अगर यह सुलझ जाए तो फलप्रद दोस्ती हो सकती है। लेकिन मेरा मानना है कि कश्मीर लक्षण है, रोग नहीं। रोग तो अविश्वास है। जब तक इसे खत्म नहीं किया जाता, तब तक दोनों देशों के बीच टकराव को कोई संधि खत्म नहीं कर सकती।

(इंटरनेट से साभार)

अखिलेश को मिल रही अपनी सरकार और पार्टी से चुनौती

समाजवादी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के बीच सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। 2012 के विधान सभा चुनाव में सपा के पोस्टर ब्वॉय और मौजूदा मुख्यमंत्री अखिलेश यादव तक इससे बच नहीं पाये हैं। शुरूआत के तीन वर्षों तक 'चाचाओं' (जिन्हें लोग सुपर सीएम की उपाधि भी देते थे) की दखलंदाजी के चलते अखिलेश अपने हिसाब से सरकार नहीं चला पाये। 2014 के लोकसभा चुनाव में सपा को मिली करारी शिकस्त के बाद जब 'चाचाओं' को बोलती बंद हुई तो ऐसा लगा कि अखिलेश को अब काम की पूरी आजादी मिल गई है। इस दौरान अखिलेश ने कई अहम फैसले भी लिये, लेकिन कुछ मामलों में कोर्ट के भीतर अखिलेश सरकार की किरकिरी भी हुई। अब तो अखिलेश को संगठन के भीतर से चुनौती मिलना शुरू हो गई है। अखिलेश के संघर्ष के दिनों के साथियों को किनारे लगाया जा रहा है। यह सब तब हो रहा है जबकि उनके पिता मुलायम सिंह यादव 'नेताजी' का उनके सिर पर हाथ है। मगर जब नेताजी के ही इशारे पर टीम अखिलेश पर गाज गिरे तो मामला गंभीर लगता है। नेताजी के कहने पर शिवपाल ने अखिलेश के चहेते समाजवादी लोहिया वाहिनी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष आनंद भदौरिया और समाजवादी छात्र सभा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सुनील यादव 'साजन' को सपा से बाहर का रास्ता दिखाया तो पार्टी में तूफान आ गया। बात यहां तक भी सीमित नहीं है। मुलायम ने एक और कड़ा फैसला लेते हुए अपने भाई और लोक निर्माण मंत्री शिवपाल यादव को जिला पंचायत चुनाव की कमान भी सौंप दी। इस पूरे घटनाक्रम के बाद सीएम अखिलेश यादव ने भी अपनी नाराजगी नहीं छिपाई। पहली बार अखिलेश ने उस सैफई महोत्सव में हिस्सा नहीं लिया जो एक तरह से उनके घर का कार्यक्रम माना जाता है। इतना ही नहीं अखिलेश ने गुस्से में आकर अयोध्या में राम मंदिर बनाने की सलाह देने वाले मनोरंजन कर विभाग के सलाहकार ओमपाल नेहरा को भी बर्खास्त कर दिया। ओमपाल, सपा प्रमुख मुलायम के करीबी माने जाते हैं। संभवतः यह पहली बार है जब उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव अपने घर में ही घिर गए हैं और उन्हें परिवार की लड़ाई में हार का स्वाद चखना पड़ा है। सीएम अखिलेश यादव को अपने नजदीकी सुनील यादव साजन और आनन्द सिंह भदौरिया को पार्टी विरोधी गतिविधियों के लिए सपा से निष्कासित किये जाने की जानकारी भी मीडिया से मिली।

> “उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव अपने घर में ही घिर गए हैं और उन्हें परिवार की लड़ाई में हार का स्वाद चखना पड़ रहा है। 'नेताजी' का उनके सिर पर हाथ है। मगर जब नेताजी के ही इशारे पर अखिलेश की टीम पर गाज गिरे तो मामला गंभीर लगता है। सपा बर्बादी के मुहाने पर है, इसे बचाने का रास्ता स्वयं अखिलेश को ही निकालना होगा।”

अखिलेश परिवार में अपने चाचाओं से पहली बार शिकस्त खाए हैं और वो भी ऐसी कि इस पीड़ा से उबरने का कोई रास्ता भी दिखाई नहीं दे रहा।

बहरहाल, अपनी इस स्थिति के लिए अखिलेश यादव भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। एक समय में स्वयं को स्थापित करने के लिए उन्हें अपने कुछ मजबूत साथियों की जरूरत थी, उस समय उन्होंने कम राजनीतिक क्षमता और औसत बुद्धि के कुछ युवाओं की पीठ पर हाथ रखा। ऐसा करना उनकी मजबूरी भी थी क्योंकि पार्टी का पुराना नेतृत्व और कार्यकर्ता उन्हें नेता के रूप में स्वीकारने को तैयार नहीं था (आज भी नहीं है)। चूक यहीं हुई। अखिलेश के अनुभवहीन करीबियों ने पुराने नेतृत्व और कार्यकर्ताओं को अपमानित करना शुरू कर दिया। इसी के चलते पार्टी के भीतर एक ऐसी लॉबी बनती चली गई जिसका जमीन पर कहीं कुछ प्रभाव नहीं था, लेकिन इस लॉबी पर अखिलेश को भरोसा था। आलम यह था कि कई-कई बार के विधायक और तमाम बड़े नेता मुख्यमंत्री से मिलने का समय माँगते रह जाते थे। यह लॉबी जिसको चाहती वह ही अखिलेश से मिल पाता था। यह भी कहा गया कि अखिलेश अपनी टीम को मजबूत कर रहे हैं और पार्टी के पुराने संघर्षशील कार्यकर्ताओं की अनदेखी कर रहे हैं। यह बात अखिलेश के चाचा शिवपाल यादव को भी रास नहीं आ रही थी।

शिवपाल कार्यकर्ताओं का बहुत सम्मान करते हैं और उनके सुख-दुःख में खड़े भी रहते हैं। शिवपाल यादव की संगठन के भीतर काफी हनक और धमक है। उनके कहने पर कार्यकर्ता और नेता कुछ भी कर गुजरने को तैयार रहते हैं। कहा जाता है कि अखिलेश की इस नासमझी का खामियाजा सपा को लोकसभा चुनाव में भी भुगतना पड़ा था। सपा बर्बादी के मुहाने पर खड़ी है, जिससे बचने का रास्ता फिलहाल अखिलेश यादव को ही निकालना है।

(इंटरनेट से साभार)

मालिक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक राजेश्वर ने अपने सर्वाधिकार से काकड़ोलिया ऑफसेट प्रिंटर्स, राम गली, झज्जर रोड, रोहतक (हरियाणा) से छपवाकर कार्यालय इंडिया पथ, 415, सेक्टर-14, रोहतक (हरियाणा) -124001 से प्रकाशित किया।
संपादक : राजेश्वर* * पीआरबी एक्ट के तहत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। **आर.एन.आई नं.- HARBIL/2014/55645 मोबाइल : 09468006004** सभी विवादों का न्यायक्षेत्र केवल रोहतक (हरियाणा) होगा।

अच्छी खुराक बिना दुश्मन से कैसे होंगे दो-दो हाथ?

विकास मित्र सक्सेना

नई दिल्ली। सातवें वेतन आयोग द्वारा कुछ समय पहले सरकार को की गई सिफारिशों के बाद कहीं खुशी, कहीं गम का माहौल है। केंद्रीय कर्मचारी तो खुश हैं। लेकिन सशस्त्र बलों (थलसेना, वायुसेना, नौसेना) के बड़े तबके में नाराजगी है। इस नाराजगी का एक अहम पहलू बलों को दिया जाना वाला मासिक अधिकृत राशन है, जिसे आयोग ने बलों के शांति स्टेशनों में तैनात सैन्य कर्मियों को मुफ्त न देने की सरकार से सिफारिश की है। अगर सरकार ये सिफारिश स्वीकार कर लेती है तो सैन्य कर्मियों को शांति स्टेशनों पर मुफ्त राशन नहीं मिलेगा। यहां बता दें कि वेतन आयोग की सिफारिशों पर अपनी चुनौतियों से तीनों सेनाप्रमुखों ने रक्षा मंत्री मनोहर परिकर को अवगत करा दिया है। उधर, सरकार में विचार-विमर्श चल रहा है।

सेना में जवानों और अधिकारियों की तैनाती दो आधार पर होती है। एक शांति स्टेशन और दूसरा युद्ध क्षेत्र (सीमा से लगा अस्थिर और अतिसंवेदनशील इलाका)। शांति स्टेशनों पर तैनात सैन्यकर्मियों को हमेशा युद्ध या आपात स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहना होता है। एक जवान को यहां पर अपनी साधारण ट्रेनिंग के अलावा करीब 4 महीने की ऑपरेशनल ट्रेनिंग भी करनी पड़ती है।

शांति से युद्ध स्टेशन में होती तैनाती

शांति स्टेशनों से ही जवानों और अधिकारियों की युद्ध क्षेत्र में तत्काल तैनाती की जाती है। यहां तक की आतंकवाद से जूझ रहे जम्मू-कश्मीर में तैनात राष्ट्रीय राइफल्स और एक्स्ट्रा रेजीमेंटल एप्लॉयमेंट (ईआरई) में जवानों, अधिकारियों की सीधे शांति स्टेशनों से ही तैनाती की जाती है। अगर शांति स्टेशन में इन्हें अच्छी खुराक ही नहीं मिलेगी तो वो आतंकवाद का पूरे आत्मविश्वास के साथ डटकर कैसे मुकाबला करेंगे। शांति स्टेशनों से ही जवानों को सीधे प्राकृतिक आपदाओं में मदद के लिए स्थानीय प्रशासन के साथ मदद के लिए भेजा जाता है। इन दिनों देश में प्राकृतिक आपदाओं से निपटना सेना की रोजमर्रा की गतिविधियों में शामिल हो गया है।

जवान की दैनिक खुराक : एक जवान की दैनिक खुराक में 1 हजार 769 ग्राम भोजन शामिल रहता है। इसके अलावा 250 एमएल दूध, 3 अंडे, 80 एमएल रिफाइन्ड तेल, गोश्त (चिकन) 240 ग्राम, ब्रेड/आटा 220 ग्राम, चावल 400 ग्राम, फल 230 ग्राम, दूध 250 एमएल, प्याज 60 ग्राम, चीनी 90 ग्राम, दाल 90 ग्राम, नमक 20 ग्राम, चाय 9 ग्राम और मिल्क पाउडर 36 ग्राम शामिल है। खाना पकाने के लिए 253 एमएल मिट्टी का तेल और 125 जीएमएस एलपीजी भी दी जाती है। शांति स्टेशनों में सेना के दिल्ली, लखनऊ, चंड़ीगढ़, जयपुर, जोधपुर, अंबाला, अमृतसर, पठानकोट, जालंधर, मेरठ, कोलकत्ता, दार्जिलिंग, तेजपुर, रांची, पानागढ़, बीनागुड़ी, गुवाहाटी, रूड़की, त्रिवेंद्रम स्थित स्टेशन शामिल है।

रोहतक। महारानी किशोरी जाट कन्या महाविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में शिक्षकों व शोधार्थियों को संबोधित करते ऑल इंडिया रेडियो, रोहतक के निदेशक डॉ. रामफल चहल। फोटो : संदीप

भारत देवी-देवताओं का देश : ग्रोवर

इंडिया पथ न्यूज

रोहतक। महामंडलेश्वर श्री 1008 स्वामी नित्यानंद जी महाराज की अध्यक्षता में स्वामी गुरू चरण दास जी महाराज की याद में सालाना यज्ञ महोत्सव का आयोजन एस.डी. मॉडल स्कूल के प्रांगण में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सालाना महोत्सव में प्रदेश भाजपा के महामंत्री एवं रोहतक के विधायक मनीष ग्रोवर मुख्यअतिथि व रोहतक के जिला अध्यक्ष रमेश भाटिया विशिष्ट अतिथि के रूप में पहुंचकर मत्था टेका और गुरूओं से आशीर्वाद प्राप्त किया व भण्डारा ग्रहण किया। इससे पहले विधायक रोहतक काठमंडी स्थित बचपन स्कूल के वार्षिक समारोह में पहुंचे और बच्चों को पुरस्कार वितरित किए और आशीर्वाद दिया। श्री ग्रोवर ने कहा कि हम सभी सनातन धर्म के मार्ग पर चलने वाले लोग है। भारत ही एक ऐसा देश है जिसमें 12 महिने कोई न कोई त्यौहार, यज्ञ महोत्सव या कोई न कोई समागम चलता रहता है। इसी बहाने हम सब यहां पर इकट्ठे होते हैं और गुरूओं का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। हमारा देश देवी-देवताओं का देश है। हमारे यहां पर ईंट की भी पूजा की जाती है पत्थर की भी पूजा की जाती है और पेड़ को भी पूजा जाता है। हमारे यहां कण-कण में भगवान बसा हुआ है लेकिन पश्चिमी देशों में 18 साल के बाद वहां के युवाओं को पता नहीं होता कि हम क्या कर रहे हैं ना ही उनके मां-बाप को पता होता कि हमारे बच्चे कहां है। उन्होंने कहा कि आज का युग पैसे का युग है। हरेक इंसान में पैसे की होड़ लगी हुई है चाहे वो पैसा किसी भी तरीके से कमाया जाए। इस बारे में उन्हें कोई परवाह नहीं होती लेकिन गलत तरीके से कमाया हुआ पैसा आपको थोड़े समय के लिए शांति जरूर देता है लेकिन बाद में उसका गंभीर परिणाम निकलता है। गलत काम करके कमाया हुआ पैसा समाज और परिवार में आपको नीचा दिखाता है और हर तरफ उसको तिरस्कार झेलना पड़ता है, इसके विपरित मेहनत और ईमानदारी से कमाए हुए पैसे से आपको समाज में लम्बे समय तक इज्जत और मान-सम्मान मिलता है।

रोहतक। एस.डी. मॉडल स्कूल के प्रांगण में स्वामी गुरू चरण दास जी महाराज की याद में सालाना यज्ञ महोत्सव में उपस्थित विधायक मनीष ग्रोवर। फोटो : संदीप

'बीर हम मां के जाए रे, रे लोटे थे एक शरीर किस्मत न्यारी-न्यारी रे'

एमकेजेकेएम कॉलेज में यूजीसी द्वारा वित्तपोषित 'ग्रामीण भारत में महिला सशक्तिकरण' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

इंडिया पथ न्यूज

रोहतक। शिक्षा ही महिलाओं को सशक्त बना सकती है। शहरी महिलाओं की अपेक्षा ग्रामीण महिलाओं का शोषण ज्यादा हो रहा है। लड़कियों के शिक्षित होने से ही महिला सशक्तिकरण का सपना सार्थक हो सकता है। यह बात सभी शिक्षकों, शोधार्थियों ने शोध पत्रों में कही। महारानी किशोरी जाट कन्या महाविद्यालय में 23 व 24 दिसंबर को यूजीसी द्वारा वित्तपोषित 'ग्रामीण भारत में महिला सशक्तिकरण' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। प्राचार्य डॉ. कृष्णा चौधरी ने मुख्य वक्ताओं का स्वागत किया।

मानव विकास संस्थान,नई दिल्ली के निदेशक प्रोफेसर अलख शर्मा ने कहा कि देश के आर्थिक विकास में महिलाओं की भागीदारी 29 प्रतिशत है जोकि बहुत कम है। इसमें महिलाओं की भागीदारी बढ़नी चाहिए। वहीं जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय,नई दिल्ली की प्रोफेसर हालिमा सादिया रिजवी ने अपने संबोधन में कहा कि 'ना हमसफर, ना किसी हमनशीं से निकलेगा, हमारे पांवों का कांटा हमीं से निकलेगा।' महिलाओं को ही अपने सशक्तिकरण के लिए स्वयं ही आगे आना होगा। संगोष्ठी कन्वीनर डॉ. सुशीला धनखड़ ने अपने प्रस्तुत शोध में कहा कि महिलाओं को जन्म से ही पितृात्मक ढांचा उनके जीवन को प्रभावित कर देता है।

एमडीयू के सेवानिवृत प्रोफेसर जितेन्द्र प्रसाद ने कहा कि महिलाओं की ऐसी मानसिक सोच को बदलना बहुत जरूरी है। शिक्षा ही उन्हें सही मार्ग दिखा सकती है।

ऑल इंडिया रेडियो, रोहतक के निदेशक डॉ. रामफल चहल ने कहा कि समाज में महिलाओं को संवेदनशील बताकर उनको प्रताड़ना दी जाती है। टीवी के कार्यक्रम भी समाज को भ्रमित कर घरेलू हिंसा को बढ़ावा दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारे लोकगीत भी समाज में महिलाओं की स्थिति को बेहतर ढ़ग से प्रस्तुत कर रहे हैं। उन्होंने लोकगीत 'बीर हम मां के जाए रे, रे लोटे थे एक शरीर किस्मत न्यारी-न्यारी रे' की पंक्तिया सुनाकर महिलाओं की करूणा को दर्शाया। डॉ. चहल ने कहा कि कुछ लोग समानता की बात कहकर महिला व पुरूष को प्रतिद्वंदी बना रहे हैं जबकि दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। इस मौके पर अनेक शिक्षाविद् व शोधार्थी उपस्थित थे।

इंडिया पथ परिवार की ओर से आप सभी पाठकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

राज्यों के 43 विधेयक नहीं बन सके कानून!

हरियाणा पर मेहरबान रहा केंद्र व मध्यप्रदेश का एक बिल लंबित

विकास मित्र सक्सेना

नई दिल्ली। केंद्र सरकार जहां संसद में महत्वपूर्ण लंबित विधेयकों को पारित कराने का प्रयास कर रही है, वहीं संसद में राज्यों के करीब चार दर्जन विधेयक कानून बनने का इंतजार कर रहे हैं। पिछले चार साल में राज्यों की विधानसभाओं में पारित होकर अनुमोदन के लिए केंद्र सरकार के पास आए 105 विधेयकों में 43 विधेयक अभी भी संसद में लंबित हैं, जो कानूनी दर्जा हासिल करने के लिए अभी केंद्र के विभिन्न मंत्रालयों व विभागों की खाक छानने को मजबूर हैं। देश की राज्यों सरकारों द्वारा विधानसभाओं में पारित ऐसे विधेयकों की संख्या भी केंद्र सरकार के पास लगातार बढ़ती जा रही है, जिन्हें राज्य में कानून का दर्जा देने के लिए केंद्र सरकार और फिर राष्ट्रपति की मंजूरी का बेसब्री से इंतजार है। हालांकि मौजूदा सरकार का दावा है कि उसने ज्यादातर राज्य के विधेयकों को अंतिम रूप दे दिया है। मसलन वर्ष 2014 में केंद्र के पास ऐसे 104 विधेयक लंबित थे, जिनकी संख्या घटकर 43 रह गई है। राज्य सरकारों से केंद्र की जांच पड़ताल और राष्ट्रपति के अनुमोदन के लिए पिछले चार साल में केंद्र के पास ऐसे 105 विधेयक लंबित थे, जिन्हें विधानसभाओं या राज्य मंत्रिमंडल की मंजूरी के बाद संबंधित केंद्रीय मंत्रालय और विभागों को जांच-पड़ताल के बाद अंतिम मुहर लगने के लिए राष्ट्रपति के समक्ष भेजा गया था।

हरियाणा पर मेहरबान केंद्र : पिछले चार साल में केंद्र को हरियाणा से छह विधेयक मिले, जिन्हें अंतिम रूप दे दिया गया है। इसी साल हरियाणा ने केंद्र को भारतीय दंड संहिता दंड विधि (संशोधन) विधेयक-2014, दंड प्रक्रिया संहिता (संशोधन) विधेयक-2014 तथा हरियाणा गौवंश संरक्षण और गौसंवर्धन विधेयक-2015 भेजा था, जिन पर केंद्र ने मुहर लगा दी है। जबकि इससे पहले तीन सालों में केंद्र के पाले में आए इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर (संशोधन) विधेयक, हरियाणा वित्तीय प्रतिष्ठा जमाकर्ता हित संरक्षण विधेयक तथा दि हरियाणा श्री दुर्गा माता श्राइन विधेयक को भी अंतिम रूप दे दिया है।

मध्य प्रदेश को एक कानून का इंतजार : केंद्र सरकार ने पिछले चार सालों में मध्य प्रदेश से मिले चार विधेयकों में तीन विधेयकों को अंतिम रूप दे दिया है, जबकि इसी साल मिले तीन में से दंड विधि (मप्र संशोधन) विधेयक-2014 लंबित है।

खरगोश फिर आया जंगल में

खरगोश शहर में ही रहने लगा। यहां उसने काफी सुख अनुभव किया। उसने आदमियों को देखा तो उसे आश्चर्य हुआ कि ये कैसे जीव है? उसने शहर में साइकिल, फटफटिया मोटर भी चलती देखीं। उसे आश्चर्य हुआ। एक बार उसने देखा, कुछ आदमी एक दूसरे से लड़ रहे हैं।

जंगल में बहुत से जानवर रहते थे। एक खरगोश भी वहां रहता था। घास खाता था और जमीन के भीरत सुरंग बनाकर रहता था। वह जब भी सुरंग से बाहर निकलता तो लोमड़ी उसे पकड़ कर अपना भोजन बनाना चाहती। या चील और उल्लू उस पर अपनी निगाह रखते। खरगोश बहुत सतर्क रहता। जब कोई उसका पीछा करता तो वह बहुत तेजी से भागता। छलांगें मारता हुआ। कभी किसी कंटीली झाड़ी में छिप जाता। कभी अपने सुरंग के किसी दूसरे या तीसरे मुहाने से जमीन में चला जाता। उसे अपना जीवन निर्वाह करने में तो कोई कठिनाई नहीं होती थी। परन्तु अपनी जान बचाने के लिए हमेशा सावधान और सतर्क रहना पड़ता था।

एक बार जंगल में बहुत तेज आंधी आई। पेड़ आपस में टकराने लगे। सब ओर हाहाकार मच गया। हर किसी को अपनी जान बचाने की चिंता पड़ गई। खरगोश उस समय अपनी गुफा से बाहर था। सुरक्षित स्थान में पहुंचने की फिराक में था कि आंधी अपने झोंके से उसे ढकेलने लगी। उसने बहुत कोशिश की कि जमीन से चिपक कर बैठा रह जाये, पर आंधी के झोंकों के आगे उसकी एक न चली। वह

हवा के थपेड़े खाता हुआ पक्के रास्ते पर आ गया। यह रास्ता जंगल से बाहर की ओर आता था। कुछ देर के बाद वह शहर में आ पहुंचा।

यहां भी आंधी ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। वह अनायास एक मकान की दीवार में ओट में आ गया। अब आंधी उसके ऊपर से निकलती चली गई। खरगोश में भी राहत की सांस ली। कुछ देर बाद आंधी बंद हो गई।

खरगोश शहर में ही रहने लगा। यहां उसने काफी सुख अनुभव किया। उसने आदमियों को देखा तो उसे आश्चर्य हुआ कि ये कैसे जीव है? उसने शहर में साइकिल, फटफटिया मोटर भी चलती देखीं। उसे आश्चर्य हुआ। एक बार उसने देखा, कुछ आदमी कए दूसरे से लड़ रहे हैं। एक ओर के लोगों ने दूसरे ओर के लोगों पर बंदूकों से गोलियां दागीं। धांए–धांए–धांए! कई लोग लहूलुहान हो गये। और कई मर गये।

खरगोश को यह देखकर फिर आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा, जंगल में तो एक तरह के जानवर, दूसरी तरह के जानवर के जान के दुश्मन होते हैं मगर यहां तो आदमी ही आदमी की जान का दुश्मन है। यहां की व्यवस्था तो जंगल से भी खराब है। और खरगोश शहर से फिर जंगल की ओर भाग गया।

मजेदार जोक्स

बच्चे ने डॉक्टर से कहा - डॉक्टर साहब ! कल आप हमारे यहां दावत में नहीं आए।
डॉक्टर - नहीं आया तो अच्छा ही रहा।
बच्चे ने पूछा - क्यों ?
डॉक्टर - दावत खाकर लौटने वाले मरीजों को कौन देखता ?

****

कसाई बकरे को लेकर काटने जा रहा था बकरा मैं-मैं चिल्ला रहा था तभी एक बच्चे ने पूछा - आपका बकरा क्यों चिल्ला रहा है ?
कसाई - में इसे काटने ले जा रहा हूं, इसलिए।
बच्चा - मैंने सोचा स्कूल ले जा रहे होंगे।

****

बच्चा - पापा-पापा, मुझे पेंसिल नहीं पेन दिलाओ ना।
पिता - लेकिन तुम्हें मेम पेंसिल से लिखने की बोलती है।
बच्चा - हां, पर बच्चों को मरते वक्त पेंसिल की नोंक हमेशा टूट जाती है।

****

एक पहलवान बच्चे ने एक कमजोर बच्चे को थप्पड़ मारा।
कमजोर बच्चे ने पूछा - यह थप्पड़ गुस्से से मारा है या मजाक से ?
पहलवान बच्चे ने कहा - गुस्से से।
कमजोर बच्चा बोला - फिर ठीक है, क्योंकि मजाक मुझे बिलकुल पसंद नहीं है।

****

किसी शादी में पंडित जी ने दूल्हे का हाथ दुल्हन के हाथ में थमा दिया। एक बच्चा ये दृश्य देख रहा था उसने अपने पिता से पूछा - पिताजी दूल्हा और दुल्हन आपस में हाथ क्यों मिला रहे है ?
पिता ने उत्तर दिया - बेटा, पहलवान अखाड़े में उतरने से पहले हाथ जरूर मिलाते है ?

****

एक बच्चे ने कहा - मैंने आपकी लिखी पुस्तक पढ़ी है। आप तो बिलकुल अकबर बादशाह की तरह लिखते हैं।
आदमी ने कहा - लेकिन अकबर बादशाह लिखना नहीं जानते थे।
बच्चे ने कहा - तभी तो मैंने कहा है।

****

पिता ने बेटे से पूछा - लगता है, मेरे ब्रश से तुमने दांत साफ किए है, तभी तो इससे इतनी बदबू आ रही है।
बेटा बोला - नहीं पिताजी ! इससे तो मैंने अपने कुत्ते के दात साफ किए थे।

नया साल

नया साल है नया साल है
खूब खुशी है खूब धमाल है।
पढ़ने लिखने से छुट्टी है
घर बाहर हर पल मस्ती है
खाना पीना माल टाल है
नया साल है नया साल है।
सभी ओर उत्सव की धूम है
लगा साथियों का हुजूम है
गाना वाना मस्त ताल है
नया साल है नया साल है।

हवा के बादल

ये बादल हल्के और फुसफुसे होते हैं। ये बर्फ के कणों से बने होते हैं। यहाँ तक कि गर्मी के मौसम में दिखने वाले बादलों में भी बर्फ के कण होते हैं क्यों कि उतनी ऊँचाई पर काफ़ी सर्दी होती है। बादलों में संघनन के कारण बूँदें बनती हैं। ऐसा तब होता है जब गरम हवा ऊपर उठती है और ठंडी हो जाती है। बादलों को देखकर मौसम की भविष्यवाणी की जा सकती है।

पानी या बर्फ़ के हज़ारों नन्हें नन्हें कणों से मिलकर बादल बनते हैं। ये नन्हें कण इतने हल्के होते हैं कि वे हवा में आसानी से उड़ने लगते हैं।

बादल के तीन प्रमुख प्रकार होते हैं— सिरस, क्युमुलस और स्ट्रेटस। इन नामों को बादलों की प्रकृति और आकार के आधार पर रखा गया है। बहुत बार बादल मिलेजुले आकार-प्रकार के भी होते हैं। ऐसे बादलों को मिलेजुले नामों से जाना जाता है। इन प्रकारों के विषय में ठीक से जानने के लिए उन के दस नाम रखे गए हैं। ये सब नाम लैटिन भाषा में हैं। ऊँचाई पर उड़ने वाले सबसे सामान्य बादल सिरस कहलाते हैं। सिरस का अर्थ है गोलाकार। इन्हें लगभग रोज़ आसमान में देखा जा सकता है। ये बादल हल्के और फुसफुसे होते हैं। ये बर्फ के कणों से बने होते हैं। यहाँ तक कि गर्मी के मौसम में दिखने वाले बादलों में भी बर्फ के कण होते हैं क्यों कि उतनी ऊँचाई पर काफ़ी सर्दी होती है।

क्युमुलस का अर्थ है ढेर। अपने नाम के अनुरूप ये बादल रूई के ढेर की तरह दिखाई देते हैं। कभी कभी ये गहरे रंग के होते हैं तब इनमें से पानी या ओलों की वर्षा हो सकती है। ऐसे बादलों को क्युमुलोनिंबस कहते हैं। क्युमुलोनिंबस बादल एवरेस्ट पर्वत से दुगुने ऊँचे हो सकते हैं और अकसर उनमें आधा करोड़ टन से ज्यादा पानी होता है। लैटिन भाषा में क्युमुलोनिंबस का अर्थ है पानी से भरा हुआ बादल।

बादलों में संघनन के कारण बूँदें बनती हैं। ऐसा तब होता है जब गरम हवा ऊपर उठती है और ठंडी हो जाती है। बादलों को देखकर मौसम की भविष्यवाणी की जा सकती है।

स्ट्रेटस का अर्थ है फैला हुआ। अपने नाम के अनुरूप ये बादल काफ़ी नीचे होते है और पूरे आकाश को घेर लेते है। जब ऐसे बादल वर्षा करते हैं तो उन्हें निंबोस्ट्रेटस कहते हैं।

DARPAN COLLEGE
Authorised Information Centre of Universities
UGC-DEB-AICTE-NCTE Recognised University Courses
Research Courses: Ph.D. M.Phil. (All Subjects)
Management Courses: MBA BBA
Information Technology: DCA, BCA, PGDCA, M.Sc.(IT), MCA
Master Degree Courses: MA, M.Sc. (All Subjects), M.Com., MSW
Traditional Courses: BA, B.Com. B.Sc., BSW
Engineering Courses: B.Tech., M.Tech. Diploma in Engg.
Education & Library: B.ED., M.ED. B.Lib., M.Lib.
Paramedical & Yoga: PMLT, DMLT, BMLT, MMLT, DPT, BPT, MPT, DOT, All Yoga Courses
Contact for Admission Guidence of LLB and LLM
सरकारी कर्मचारी डिस्टेंस से अपनी शिक्षा बढ़ाएं, सभी कोर्स हरियाणा में मान्य
Sonipat Road,Sheela Bypass Chowk, ROHTAK
Mobile : 08607855300, 08607854300, E-mail : darpanrohtak@gmail.com

विद्या घर पर ही मनाएंगी जन्मदिन

मुंबई। अभिनेत्री विद्या बालन ने कहा है कि वह अपना 37वां जन्मदिन अपने परिवार के साथ मनाने के लिए अस्पताल से घर लौटकर खुश हैं।'कहानी की अभिनेत्री को शहर के एक अस्पताल में 29 दिसंबर को भर्ती किया गया था। उनके गुर्दे में पथरी का शक था।

विद्या ने ट्वीट किया, जन्मदिन के मौके पर घर लौटकर खुश हूं। आप सब के प्यार, दुआओं और शुभकामनाओं के लिए शुक्रिया। प्रत्येक को 2016 की मुबारकबाद।'' अभिनेत्री और उनके निर्माता पति सिद्धार्थ रॉय कपूर ने नया साल और विद्या का जन्मदिन आज विदेश में किसी अज्ञात जगह पर मनाने की योजना बनाई थी, लेकिन विद्या की बीमारी की वजह से उन्हें अपनी योजना को रद्द करना पड़ा।

पड़ोसी ने खींची थी लीजा की तस्वीरें

मुंबई। ग्लैमर वर्ल्ड में कामयाबी पाने के लिए मॉडलों को कई स्थितियों से गुजरना पड़ता है। ऐसी ही एक अजीब स्थिति से अभिनेत्री लीजा हेडन भी सामना भी कर चुकी है। बात उन दिनों की है जब वह मॉडलिंग में अपना करियर शुरू कर रही थीं। लीजा हेडन ने हाल ही में एक फोटोशूट कराया। उसी दौरान उन्होंने अपने बचपन और शुरुआती करियार के बारे में कई बातें की। इसी बीच एक बड़ा राज भी खुल कर सामने आया। लीजा ने बताया कि ऑस्ट्रेलिया के सिडनी शेहर में वे रेस्टोरेंट में वेटर का काम करती थीं। उनकी एक दोस्त मॉडलिंग में थी। उस दोस्त ने लीजा को मॉडलिंग में हाथ आजमाने के लिए सुझाव दिया। उसने लीजा को एक एजेंट के पास जाकर अपनी तस्वीरें दिखाने को कहा। लीजा के पास ऐसी कोई तस्वीर नहीं थी जिसे दिखाकर वे एजेंट को खुश कर सकें। एजेंट ने कहा कि वे वापस जाएं और तस्वीरें खिंचवा कर फिर से आएं। लीजा को ऐसे में कुछ नहीं सूझा। उनके पास कोई नहीं था जो उनकी तस्वीरें खींच सके तो उन्होंने अपने पड़ोसी के पास जाने का फैसला किया, जो कि जर्मनी का रहने वाला था। लीजा ने बताया, उसने मेरे बाथरूम में मेरी तस्वीरें लीं। मुझे कोई अंदाजा नहीं था कि कैसे पोज देते हैं। इसीलिए मैं सीधे ऐसे इंसान के पास गई जिसे मैं जानती थी और जो इस काम के लिए कभी मना नहीं करता। वो मुझे थोड़ा पंसद भी करता था। लीजा ने बाथरूम में तस्वीरें खिंचवाने के पीछे भी एक दिलचस्प वजह बताई। बाथरूम में तस्वीरें खींचने के पीछे यह वजह थी कि बाथरूम की दीवार घर में इकलौती ऐसी दीवार थी जो सफेद थी। उसी के सामने एक शीशा लगा था जिसमें देख कर मैं तय कर सकती थी कि किस तरह खड़े हो कर पोज अच्छा आएगा। लीजा आखिरी बार फिल्म द शौकीन्स में दिखी थीं।

भारतीय महिलाओं की आंखें बेहद खूबसूरत

नई दिल्ली। बॉलीवुड की नवोदित अभिनेत्री आतिया शेट्टी का मानना है कि भारतीय महिलाओं की आंखे बेहद खूबसूरत हैं। आतिया सौन्दर्य प्रसाधन निर्माता कंपनी मेबलीन न्यूयॉर्क की ब्रांड एंबेसडर हैं। आतिया ने कहा, 'यह अच्छी बात है कि भारतीय महिलाओं को खूबसूरत आंखों का तोहफा मिला है, क्योंकि मुझे लगता है कि भारतीय महिलाओं की आंखें बेहद खूबसूरत हैं। ये बादाम के आकार की हैं। बड़ी-बड़ी भूरी और खूबसूरत आंखें। यहां तक कि स्कूल में हमें सिर्फ इसके मेकअप के इस्तेमाल की अनुमति दी गई थी।' आतिया ने कहा, 'जब मैं शूटिंग पर नहीं होती हूं तो मुझे लगता है कि त्वचा का सांस लेना जरूरी है, इसलिए मैं थोड़ा लिप बाम, और मस्कारे का भी इस्तेमाल करती हूं। मैं मस्कारे के बिना घर से नहीं निकलती। मेरी दादी आज भी रविवार को मुझे बैठाकर मेरे बालों में नारियल का तेल लगाती हैं और मैंने जब से होश संभाला है, तब से ऐसा कर रही हूं। यह मेरे बालों का रहस्य है। मुझे स्पा और किसी और चीज की जरूरत नहीं होती।'

'शब' में सबको आश्चर्यचकित कर देंगी रवीना टंडन

मुंबई। फिल्मकार ओनिर का कहना है कि उनकी आने वाली फिल्म 'शब' में अपनी अदाकारी से रवीना टंडन सबको आश्चर्यचकित कर देंगी। 'बॉम्बे वेलवेट' में एक छोटे से किरदार में नजर आईं रवीना का इस फिल्म में एक दमदार किरदार है। रवीना की इस फिल्म से वापसी को लेकर सवाल पूछने पर ओनिर ने कहा, जी हां, क्योंकि 'बॉम्बे वेलवेट' में उनका किरदार काफी छोटा था। मुझे सच में लगता है कि वह एक बेहतरीन अदाकारा हैं। मैं लंबे समय से उनके साथ काम करना चाह रहा था। इस फिल्म में अपनी अदाकारी से वह सबको आश्चर्यचकित कर देंगी।' उन्होंने कहा, फिल्म 'दामन' के समय से ही मैं इसकी पटकथा पर काम कर रहां हूं। मैं बहुत खुश हूं कि आखिरकार फिल्म बन रही है। मेरे लिए यह एक सपना सच होने जैसा है।

सुल्तान के लिए 100 करोड़ लेंगे सलमान

मुंबई। बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान अपनी आने वाली फिल्म सुल्तान के लिए 100 करोड़ की फीस लेने जा रहे हैं।सलमान खान की फिल्में बॉक्स ऑफिस पर कीर्तिमान बना रही है। सलमान एक फिल्म के लिए 100 करोड़ जितनी बड़ी रकम लेने वाले अकेले अभिनेता बन सकते हैं। सलमान खान इन दिनों यशराज फिल्मस के बैनर तले बन रही फिल्म 'सुल्तान' में काम कर रहे हैं। चर्चा है कि इसके लिए उन्होंने मुनाफे में बराबर हिस्सा लेने का सौदा किया है।

सुपरहिट फिल्म का रीमेक बनाएंगे रोहित

मुंबई। बॉलीवुड निर्देशक रोहित शेट्टी शाहिद कपूर को लेकर फिल्म नही बना रहे हैं। चर्चा थी कि रोहित और शाहिद जल्द ही एक प्रोजेक्ट पर साथ काम करने वाले हैं लेकिन रोहित शेट्टी ने इससे इंकार करते हुए साफ कहा है कि वह शाहिद कपूर के साथ काम नहीं कर रहे हैं। रोहित शेट्टी ने कहा नहीं, मैं शाहिद के साथ काम नहीं कर रहा हूं। मुझे नहीं पता कहां से इस तरह की खबरें आ रही हैं। हम सिर्फ एक बार मिले हैं और ऐसा कोई प्रोजेक्ट नहीं है जिस पर हम अभी साथ काम

मेरे में प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति नहीं

मुंबई। अभिनेता फरहान अख्तर का कहना है कि वह एक नंबर वाली बात में विश्वास नहीं रखते और ना ही फिल्म इंडस्ट्री में किसी को चुनौती देने की उनकी मंशा है। अख्तर ने कहा, ''मेरे अंदर यह प्रतिस्पर्धा वाली प्रवृत्ति नहीं है जहां मुझे दूसरों से बेहतर करने की चाह हो। मैं उम्मीद करना हूं कि हर कोई अच्छा काम करे क्योंकि एक अभिनेता के तौर पर सबके लिए स्थान है। मेरा मानना है कि सब अच्छा करते हैं।''

केले के पौष्टिक गुणों को हम कितना कम जानते हैं!

मूसासी परिवार का सदस्य केला बहुत प्राचीन फल है। 326 ईसा पूर्व में सिंधु घाटी में केले का उल्लेख मिलता है। इसका वनस्पति नाम मूसा पारादिसिआका लिनिअस है। हमारे देश में यह सर्वत्र तराई वाले स्थानों, मंदिरों, धार्मिक स्थानों में खूब मिलता है। मांगलिक कार्यों में इसकी बड़ी उपयोगिता है। यह धार्मिक कृत्यों तोरण, वेदिका मंडप आदि की सजावट में काम आता है।

अन्य फलों की अपेक्षा केला बहुत पौष्टिक होता है परन्तु आमतौर पर लोग इसके गुणों से अनभिज्ञ होते हैं क्योंकि यह बहुतायत में मिलता है। केले में ग्लूकोज (घुलने वाली शक्कर) होती है। इसलिए इसकी उपयोगिता बहुत अधिक है। यह खाते समय मुंह में ही घुल जाता है। इससे शरीर को तुरन्त बल मिलता है।

केले में लगभग 75 प्रतिशत जल होता है। इसमें कैल्शियम, मैग्निशियम, फासफोरस, लोहा तथा तांबा पर्याप्त मात्रा में होते हैं। मानव शरीर में रक्त निर्माण में लोहा, मैग्निशियम तथा तांबा सक्रिय भूमिका निभाते हैं। इसलिए रक्त निर्माण तथा रक्त परिशोधन में केला बहुत सहायक है। केले में कैल्शियम प्रचुर मात्रा में होता है इसलिए यह आतों की सफाई के लिए बहुत लाभकारी है। केला अम्लीय भोजन पर क्षारीय क्रिया करता है। विटामिन (डी) के अलावा अन्य सभी प्रकार के विटामिन इसमें पाए जाते हैं। केले में लगभग 22 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, दो प्रतिशत प्रोटीन तथा एक प्रतिशत वसा भी होता है।

आयुर्वेद के अनुसार पका केला शीतल, वीर्यवर्धक, पुष्टिकर, मांसवर्धक, क्षुधा, प्यास, नेत्र रोगों तथा प्रमेह को नष्ट करता है। कच्चा केला कब्ज, ठंडा, कसैला, पचने में भारी, वायु तथा कफ पैदा करने वाला होता है।

केले के शरबत को खांसी के लिए रामबाण समझा जाता है। इसके लिए पके हुए केले को काटकर उसमें चीनी मिला लें और उसे बंद मुंह वाले बर्तन में रख दें। अब एक चौड़े मुंह वाले बर्तन में पानी डालकर उसमें बंद मुंह वाला बर्तन रखकर आग पर गर्म करें। जब पानी खौल जाए तो बर्तन नीचे उतार लें और केल को ठंडा करें। ठंडा होने पर इसे चम्मच मे मथ कर एकसार कर लें। केले के इस शर्बत से खांसी तो मिटती ही है। साथ ही यह वीर्यवर्धक, प्यास, नेत्र रोग तथा प्रमेह को नष्ट करने वाला होता है।

आंतों के विकारों में तथा दस्त, पेचिश एवं संग्रहणी रोगों में दो केले लगभग 100 ग्राम दही के साथ सेवन करने से लाभ होता है। जीभ पर छाले हो गए हों तो एक पके केले का सेवन गाय के दूध से बने दही के साथ करें। इससे छाले ठीक हो जाएंगे।

दमे के इलाज के लिए भी केला लाभकारी है। इसके लिए एक कम पका केला लेकर बिना छिलका उतारे उसे बीच में चीर लें इस चीर में जरा सा नमक तथा काली मिर्च का चूर्ण भर दें। इस केले को पूरी रात चांदनी में पड़ा रहने दें, सुबह इस केले को आग पर भूनकर रोगी को खाने के लिए दें।

श्वेत प्रदर के निदान के लिए प्रतिदिन नियमित रूप से दो पके केलों का सेवन करना चाहिए। प्रतिदिन सुबह-शाम एक केला लगभग 5 ग्राम शुद्ध देसी घी के साथ खाने से भी प्रदर रोग दूर होता है। गर्मी में नकसीर फूटने पर एक पका केला शक्कर मिले दूध के साथ नियमित रूप से आठ दिन तक सेवन करें। इससे नकसीर आना बंद हो जाता है। चोट या खरोंच लगने पर केले का छिलका उस स्थान पर बांधने से सूजन नहीं बढ़ती। केला सभी प्रकार की सूजन में लाभकारी है। इसके नियमित सेवन से आतों की सूजन भी मिटती है। आग से जलने पर प्रभावित स्थान पर केले का गूदा फेंटकर मरहम की तरह लगाने से तुरंत ठंड पड़ जाती है। केले में लौह तत्व होता है इसलिए यह पाण्डु रोग में बहुत लाभकारी होता है। बिना छीले केले पर भीगा चूना लगाकर रात ओस में रखकर सुबह छीलकर खाने से पीलिया दूर हो जाता है यह प्रयोग एक से तीन सप्ताह तक नियमित रूप से करना चाहिए। मोटापा बढ़ाने के लिए दो पके केले लगभग 250 मिली लीटर दूध के साथ एक महीने तक नियमित रूप से सेवन करना चाहिए।

त्वचा पर जादू का काम करता है अंडे का मास्क

अंडा न सिर्फ हमारी सेहत को दुरुस्त रखता है बल्कि यह हमारी त्वचा की खूबसूरती के लिए भी फायदेमंद है। यह त्वचा पर जादू का काम करता हैं और इसे चिकना और चमकदार बनाता हैं। जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती हैं वैसे-वैसे त्वचा में बदलाव आना शुरू होता हैं। यह प्राकृतिक प्रक्रिया है। ज्यादातर युवतियां इस समस्या से निपटने के लिए और रसोईघर में मौजूद चीजों का इस्तेमाल करती हैं। सारी प्राकृतिक चीजों में अंडे को भी महत्वपूर्ण माना गया है। एक अध्ययन में यह बात सामने आई हैं कि अंडे में मौजूद प्रोटीन त्वचा को लचीला और जवां दिखने में मदद करता है। अंडे में मौजूद 60 विभिन्न प्रोटीन के अलावा इसमें कोलाजोन और विटामिन 'ए' भी होता हैं जो त्वचा पर मौजूद निशान, एक्ने, खुले रोम छिद्र और चकत्ते को भी दूर करता हैं। जब भी आप अंडे का मास्क बना रहे हों, तो ध्यान रहें उसे अच्छी तरह मिला ले। अंडे को मिलाने के बाद जब सफेद झाग बनने लगे तब इसे इस्तेमाल करें। यह झाग त्वचा पर जादू का काम करता है। अंडे का मास्क त्वचा को चमकदार बनाता हैं। यह बेहद आसान तरीका है त्वचा को साफ व चमकदार रखने का। अंडे का पीला हिस्सा निकालकर अलग रख दें। सिफ सफेद हिस्से को पूरी तरह मिलाकर इस्तेमाल करें। दस से 15 मिनट इसे चेहरे पर लगा रहने दें, फिर साफ पानी से धो लें। अगर आप एक्ने और मुंहासे से परेशान हैं, तो अंडे का मास्क बेहद कारगर हैं। अंडे के सफेद भाग को शहद और नींबू के रस में मिला लें। यह एक्ने से लड़ने में मदद करता है और चेहरा आकर्षक बनाता है। अगर आपका चेहरे का रंग अलग है तो इसे साफ करने के लिए अंडे में एक चम्मच संतरे का जूस और आधा चम्मच हल्दी मिलाकर लगाने से चेहरे का रंग निखरता

हैं और चेहरे के दाग-धब्बे दूर होते हैं। यह चेहरे को बेरंग होने से बचाता है। अगर आपकी त्वचा सूखी और बेजान हैं, तो अंडे में दही और एवोकाडो मिलाकर लगाएं। अचानक कमी चेहरे पर जलन या खुजली होने लगती है। यह परेशानी कई लोगों को होती हैं। ऐसे में अंडे में शहद, दही और खीरे का जूस मिलाकर लगाने से आराम मिलता हैं। शहद में ऐंटीसेप्टिक और एंटीबैक्टिरियल चीजों मौजूद होती हैं जो त्वचा को इस समस्या से छुटकारा दिलाती हैं। खीरे का रस त्वचा को नमी देता हैं और साफ करता हैं यह मिश्रण सनबर्न चेहरे पर दरारें, एक्ने और आंखों के नीचे बने काले घेरे से छुटकारा पाने में मददगार है। अंडे की सफेदी को अगर आटे के साथ मिलाकर लगाया जाए तो यह हर प्रकार की त्वचा के लिए कारगर है।

शहरीकरण और तनाव के दौर में अवसाद तो आम बात है!

जब भी हम किसी तनाव से गुजर रहे होते हैं, तो इस स्थिति में सबसे ज्यादा जरूरत किसी ऐसे व्यक्ति की होती है, जो हमसे बात करें। हमारी भावनाओं को समझे। शहरीकरण बढ़ने के साथ लोगों का तनाव बढ़ता गया है। ऐसे में अवसाद कोई बड़ी बात नहीं। मगर अवसाद में घिरे व्यक्ति को स्थिति से बाहर निकालने के लिए बातचीत भी एक उपाय है।

ज्यादातर लोग ऐसे किसी व्यक्ति से बात करना पसंद नहीं करते, जो तनाव और अवसाद से घिरा हो। आज की जीवनशैली में लोग खुद इतने तनाव में हैं कि वह दूसरों से बात करना पसंद नहीं करते। मगर हाल में हुए एक शोध में यह बात सामने आई हैं कि ऐसे मरीजों को (टाकिंग थेरेपी) देने पर दिमाग एक बार फिर अपने आप को फिर से सही करने में जुट जाता है। मनोचिकित्सकों की मानें तो यह घाव पर मरहम का काम करता है जो जिंदगी भर के लिए मरीज को सामान्य करने में मदद करता है। अवसाद से घिरे मरीजों से बात करना उनके लिए इलाज का काम करता है। टॉकथेरेपी यानी बातचीत से इलाज। जिसमें ऐसे मरीज की मदद की जाती है जिसकी मानसिक स्थिति असामान्य हो। जिसे अपनी भावनाओं को दूसरे को समझाने में परेशानी होती हो या फिर उसके व्यवहार में असमानता दिखती है। बातचीत की प्रक्रिया के साथ-साथ इन्हें मेडिटेशन भी कराया जाता है ताकि इनकी परेशानी जल्द दूर हो। टॉकथेरेपी मरीज के अंदर की नकारात्मक सोच कम करने में मदद करती है और जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सहायता करती है। जीवन के उतार चढ़ाव से जब व्यक्ति ज्यादा परेशान हो जाता है तब उसे मानसिक स्वास्थ्य संबंधी दिक्कत होने लगती है। ऐसे में अपने मन की बात को किसी व्यक्ति या मनोचिकित्सक से साझा कर इस समस्या से निपटने में मदद मिल सकती है। यह आपके सोचने का दृष्टिकोण बदलेगा और समस्याओं का सामना करने में मदद करेगा। बातचीत किसी भी संबंध के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह संबंधों को मजबूत करती है और दिमागी रूप से व्यक्ति को स्वस्थ रखती है। बातचीत से सामने वालों को आपको समझने का मौका मिलता है और वह आपका ज्यादा ध्यान रख

सकता है। बातचीत करने से अवसाद, बेचैनी, भूख की अनियमितता और दवाइयों से भी छुटकारा मिलता है। बातचीत सीजोफ्रिनिया और बाइपोलर जैसे डिसार्डर को भी ठीक करने में मदद करती है। इसके अलावा जिंदगी भी ठीक करने में मदद करती है। इसके अलावा जिंदगी की कई छोटी-बड़ी समस्याओं, कामकाज की समस्या, स्वास्थ्य संबंधी समस्या को दूर करने में मदद करती है जो अवसाद के बड़े कारण बनते हैं। टॉक थेरेपी के दौरान जरूरी है कि आप सामने वाले व्यक्ति के साथ पूरी तरह ईमानदार रहें। यह आपको अपने अंदर के डर से लड़ने में मदद करेगा। कई बार यह प्रक्रिया काफी लंबी होती है ऐसे में परेशान होने या घबराने की जरूरत नहीं। यह मरीज की स्थिति पर निर्भर करता है कि यह प्रक्रिया लंबी होगी या छोटी। किसी भी व्यक्ति को अवसाद से छुटकारा दिलाने के लिए जरूरी है कि बातचीत के जरिए आप उसे समझें और उसे इस परेशानी से निकालने का हल ढूंढें।